हिन्दी

श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

मास्टर ऑफ जैनिज्म् द्वितीय वर्ष-२

द्वितीय सत्र

April-2024

प्रश्न - पत्र

गुणांक - ५०

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है । ५. गलत एनरोलमेन्ट नंबर तथा नहीं समझे ऐसे एनरोलमेन्ट नंबर के १० अंक कम कर लिये जायेंगे । ६. समय पर ता. २८ फरवरी तक पेपर नही मिले तो दूसरे १० अंक कम किये जायेंगे। ७. निबंध के मार्क्स ग्रेड पद्धति से दिये जायेंगे। ८. जवाब पत्र, निबंध में नाम, एनरोलमेन्ट नंबर, वर्ष और सत्र लिखना जरुरी है । ९. जवाब तत्वार्थ सूत्र की अभ्यास पुस्तक के अध्याय ८,९,१० मेंसे लिखे जायेंगे (पृष्ठ १९२ से २४० तक) ।

प्रश्न नं. १ योग्य विकल्प ढूंढकर रिक्त स्थान की पूर्ति करो २५

१. जिसका चित्त.................. हो वह रुद्र कहलाता है ।
२. दृष्टि या पंथ संबंधी सभी एकान्तिक कदाग्रह.................. मिथ्या दर्शन है ।
३. जिस कर्म के उदय से जाग्रत अवस्था में सोचे हुए काम को निद्रावस्था में करने का सामर्थ्य प्रकट हो जाय वह............है ।
४. पुलाक का उत्कृष्ट उपपात.................... में बीस सागरोपम की स्थिति में होता है ।
५. सर्वज्ञ में मोह न होने से क्षुधा आदि वेदना रुप न होने के कारण................ मात्र से द्रव्य परिषह हैं ।
६. अस्थिबंध की विशिष्ट रचना रुप................... की विविध आकृतियों का निमित्त कर्म संस्थान है ।
७. सूक्ष्म कायिक व्यापार के अस्तित्व के समय मे............... नामक तीसरा शुक्ल ध्यान माना गया है ।
८. ....में अनंतानुबंधी कषाय का क्षय करने योग्य विशुद्धि प्रकट होती है ।
९. धर्ममार्ग से च्युत न होने और उसके अनुष्ठान में स्थिरता लाने के लिये.............. करनी चाहिये ।
१०. जिसका उदय तात्विक रुचि का निमित्त होकर भी औपशमिक या ....तत्वरुचि का प्रतिबंध करता है वह सम्यकत्वमोहनीय है ।
११. नौकर चाकर आदि के प्रमाण का अतिक्रमण करना..................... कहलाता है ।
१२. मन वचन काया की प्रवृत्ति में एकरुपता रखना ऐसा अर्थ.................. के लिये फलित होता है ।
१३. जिन कर्मो के उदय से आविर्भाव को प्राप्त कषाय इतने तीव्र हो कि विरती का ही प्रतिबंध कर सके वे............. कषाय है ।
१४. दोषो के स्वरुप और उनसे छुटकरा पाने के विचारार्थ मनोयोग लगाना.............. धर्मध्यान है ।
१५. यथाख्यात संयम वाले एकमात्र................... होते है ।
१६. ध्यानावस्था में मंद या मंदतम................... तो रहता ही हैं ।
१७. संसारतृष्णा का त्याग करने के लिये सांसारिक वस्तुओं मे .... की साधना आवश्यक है ।
१८. कर्मयोग्य.................. स्थूल (बादर) नहीं होते ।
१९. ध्यान करने वाला साधक मन आदि किसी भी एक योग को छोडकर अन्य योग का अवलम्बन लेता है, तब वह ध्यान.................. कहलाता है ।
२०. तीसरे और चौथे शुक्लध्यान में किसी प्रकार के .... का आलम्बन नहीं होता ।
२१. चार घाति कर्मो का .... हो जाने से सर्वज्ञता प्रकट होती है ।
२२. प्रथम पाँच गुणस्थान वाले .... ध्यान के स्वामी होते हैं ।
२३. जीवद्रव्य का स्वभाव.................... की भांति गतिशील है ।
२४. क्रोधित व्यक्ति आवेश में आकर अपने................ को नष्ट कर डालता है ।
२५. वर्तमान दृष्टि से जिस अवगाहना से सिद्ध हुआ हो उसीकी.....................अवगाहना होती है ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो २५

१. कर्मबंध की स्थिति और अनुभाव की अल्पाधिकता किसकी तीव्रता मंदता पर अवलंबित है ?
२. स्वभाव से जीव अमूर्त होने पर भी क्या होने से मूर्तवत हो जाता है ?
३. सिद्धि तथा कीर्ति का अभिलाषी निर्ग्रन्थ क्या कहलाता है ?
४. किन गुणस्थानक में घाती कर्मजन्य परिषहों का अभाव होता है ?
५. एक आत्मा में एक साथ अधिक से अधिक कितने परिषह संभव है ?
६. मोहनीय की जघन्य स्थिति कौनसे गुणस्थानक में संभव है ?

७. व्यवहार, जीतकल्पसूत्र ग्रंथ कैसे ग्रंथ है ?
८. ध्यान का अन्तर्मुहुर्त का काल परिणाम किसका है ?
९. क्षुल्लक और महा यह दो प्रकार किस तप के हैं ?
१०. विहायोगति नामकर्म की कौनसी परकृति कहलाती है ?
११. व्रती बनने के लिये सर्व प्रथम किनका त्याग आवश्यक माना गया है ?
१२. श्रावक के बारह व्रतों के अतिचारों का जानबूझकर अथवा वक्रतापूर्वक सेवन किया जाये तब ये व्रत के खंडनरुप क्या कहलायेंगे ?
१३. दर्शन या वाणी से दूसरे को निष्प्रभ कर देने वाली दशा प्राप्त कराने वाला कर्म कौनसा है ?
१४. स्थूलदृष्टि की प्राप्ति से लेकर सर्वज्ञदशा तक किसके दस विभाग किये गये हैं ?
१५. पात्र को ज्ञानादि सद्‌गुण प्रदान करना क्या है ?
१६. विग्रह द्वारा जन्मान्तर गमन के समय जीव को आकाश प्रदेश की श्रेणी के अनुसार गमन कराने वाला कर्म कौनसा है ?
१७. प्रशस्त वर्ण गंध रस स्पर्श ये कर्म की किस प्रकृति मे आते हैं ?
१८. श्रावक में किस कषाय के क्षयोपशम से अल्पांश में विरती प्रकट होती है ?
१९. मुक्त जीव किस निमित्त से उर्ध्व गति करता है ?
२०. किन भावो के नाश को मोक्ष का कारण कहां गया है ?
२१. तत्व की यथार्थ प्रतीतिस्वरुप सम्यग् दर्शन से विचलित न होना क्या ?
२२. द्वीपसिद्ध किनसे संख्यातगुण अधिक होते हैं ?
२३. किस परंपरा में चौथे से सातवे गुणस्तानो में ही धर्मध्यान की संभावना मान्य है ?
२४. घृणाशीलता का जनक कौन है ?
२५. किसी के द्वारा ताडन तर्जन किये जाने पर भी उसे सेवा ही मानना क्या है ?

प्रश्न नं. ३ विविध ग्रंथो की सहायता से तुम्हारे शब्दों में १० से १५ पन्नो का महानिबंध लिखो (कोई भी एक)

१. भवभ्रमण में मोहनीय कर्म की प्रधानता (व्याख्या, भेद, प्रकृतियाँ, कषायों का स्वरप आदि)
२. सिद्धमान गति तथा सिद्ध (गतियों के स्वरुप, सिद्ध गति के हेतु, अधिकारी, क्षेत्र, अन्य विशेषतायें)
३. अनुप्रेक्षा (व्याख्या, प्रकार, चिन्तन, मनन, जीवनशुद्धि में उसकी उपयोगिता)

एम.जे. पार्ट -१ केन्द्रिय परिक्षा पत्र कैसा होगा ?

प्रश्न -१	रिक्त स्थान भरो	गुणांक - २०
प्रश्न -२	एक शब्द मे जवाब लिखो	गुणांक - २०
प्रश्न -३	नीचे के वाक्य सही या गलत बताईये	गुणांक - २०
प्रश्न -४	जोडियाँ लगाओ	गुणांक - २०
प्रश्न -५	एक वाक्य में व्याख्या लिखो	गुणांक - २०
		कुल गुणांक - १००

निबंध के लिये नीचे मुजब ग्रेडिंग रहेगी

१) ४० मार्क्स के उपर A+ २) ३५ मार्क्स के उपर A ३) ३० मार्क्स के उपर B+ ४) २५ मार्क्स के उपर B
५) २० मार्क्स से कम C

उत्तर पत्र लिखे पते पर भेजिए : सौ. काश्मीरा विनोद लोडाया
शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबद (महा.) ४३१ ००१
सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com